5 सितम्बर, 2020

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों का वर्चुअल सम्मेलन (Virtual Conference)

- अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।
- आज शिक्षक दिवस भी है जो भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जन्म जयंती के अवसर पर मनाया जाता है।
- शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर अपनी और आप सभी की ओर से मैं उस महान व्यक्तित्व को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और देश के सभी शिक्षकगण को बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।
- आज के ही दिन तमिलनाडु के प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी श्री चिदम्बरम पिल्लई जी का भी जन्म हुआ था और आज ही के दिन दो महान भारतीय महिलाओं, मदर टेरेसा और सुश्री नीरजा भनोट जी की पुण्य तिथि भी है। मैं इन सभी महान पुण्यात्माओं को अपनी और आप सबकी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।
- साथियो, यह पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन का शताब्दी वर्ष है। पीठासीन अधिकारियों का पहला सम्मेलन वर्ष 1921 में शिमला में आयोजित किया गया था। आप सबको स्मरण होगा कि देहरादून में जब 79वां सम्मेलन हुआ था, तो यह निर्णय लिया गया था कि अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों का शताब्दी वर्ष का सम्मेलन भव्य रूप से मनाया जाएगा।
- हमारा प्रयास था कि पीठासीन अधिकारियों का सौवां सम्मेलन भी शिमला में ही आयोजित किया जाए लेकिन वर्तमान कोरोना महामारी के कारण यह संभव नहीं हो पाया। यही कारण है कि आज इस सम्मेलन का आयोजन हम वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से कर रहे हैं।
- पिछले सम्मेलन में पीठासीन अधिकारियों द्वारा एक मासिक स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया था और लोकसभा ने इस बारे में कार्य आरम्भ भी कर दिया था। पर कुछ तकनीकी कारणों से यह कार्य समय पर पूरा नहीं हो सका है। हम प्रयास कर रहे हैं कि इस स्मारिका का प्रकाशन 2 अक्टूबर को पूज्य बापू के जन्मदिन समारोह पर आरंभ कर दिया जाए।
- इस वर्ष हमारे इस सम्मेलन का विषय है **'असाधारण परिस्थितियों में विधायी कार्यो के निष्पादन'।** आज पूरा विश्व कोरोना महामारी के विकट दौर से गुजर रहा है। इस अभूतपूर्व संकट ने हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था पर गहरा असर डाला है। हमारे देश में इस महामारी के कारण हजारों लोगों की मृत्यु हो गई है और लाखों लोगों की आजीविका पर संकट आ गया है।
- परंतु इस त्रासदी ने देश पर एक रचनात्मक प्रभाव भी डाला है। सहकारी संघवाद की भावना से केंद्र और राज्य सरकारें दोनों मिलकर इस संकट का मुकाबला कर रही है। समाज का हर वर्ग एक होकर, कंधे से कंधा मिलाकर सरकार के प्रयासों में साथ दे रहा है और इस बीमारी से लड़ रहा है।

- विभिन्न स्तरों पर सरकारी निकाय तो जनता की समस्याओं के निराकरण का प्रयास कर ही रहे हैं, लेकिन निजी संगठन और व्यक्तिगत स्तर पर भी लोग आगे आ रहे हैं और उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके यथासंभव लोगों की सहायता कर रहे हैं।

- हमें यह याद रखना होगा कि इस प्रकार के महासंकट का मुकाबला सामाजिक एकता, संगठन और दृढ़ संकल्प की भावना से ही किया जा सकता है। **कोरोना के खिलाफ युद्ध में हर नागरिक एक योद्धा है।**

- मुझे आपको बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि अभी कुछ दिन पहले मुझे विश्व की संसदों के अध्यक्षों के पांचवें विश्व सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला था। आईपीयू, ऑस्ट्रिया की संसद और संयुक्त राष्ट्र संघ के संयुक्त तत्वावधान में होने वाला यह सम्मेलन वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आयोजित किया गया था।

- सांसदों और जनता के बीच दूरी को कम करने के विषय पर आयोजित इस सम्मेलन को संबोधित करते हुए मैंने टेक्नोलॉजी और सूचना क्रांति के इस दौर में संसदीय निगरानी और शासन में सुधार लाने के लिए सभी विधायिकाओं को अपने कामकाज में जनता की भागीदारी बढ़ाने की जरूरत पर बल दिया था।

- अपने उद्बोधन में मैंने भारत जैसे बड़े देशों में जनता और संसद के बीच निकट संपर्क को सुचारू बनाने के लिए पांच प्रक्रियाओं का उल्लेख किया। इन्हें हम पांच **'आई'** भी कह सकते हैं-

- **पहला 'I' है Interact -** हमारे सांसद हमेशा जनता से जुड़े रहते हैं और उनसे प्राप्त सूचना एवं सुझावों को सदन में परिलक्षित करते हैं।

- **दूसरा 'I' Inform है-** सूचना प्रसार माध्यमों, सोशल मीडिया के द्वारा जनता को लगातार योजनाओं और नीतियों के बारे में अवगत कराया जाता है।

- **तीसरा 'I' है Involve -** जिसके अंतर्गत जन-जन को विकास प्रक्रिया में शामिल किया जाता है।

- **चौथा 'I' Imbibe है** जिसमें जनता से शासन प्रक्रिया पर मिले सुझावों को आत्मसात किया जाता है। और

- **पांचवे 'I' Improve** के तहत शासन प्रक्रिया एवं योजनाओं में अपेक्षित सुधार किया जाता है।

- कोरोना महामारी के इस दौर में जब हमारी जीवन शैली और कार्य शैली पर अनेक प्रतिबन्ध लगे हुए हैं, तब सांसदों एवं विधायकों के लिए जनता के संपर्क में रहने और उनकी अनवरत सेवा करने के लिए IT एवं सूचना क्रांति के माध्यमों का बढ़ चढ़ कर प्रयोग करना ही एकमात्र व्यावहारिक उपाय है।

- बल्कि ऐसे समय में हमें नई पद्धतियां या नए तरीके विकसित करने होंगे ताकि हमारे कार्य की गुणवत्ता और उत्पादकता में कमी न होने पाए और हमारे कार्यक्रम को एक नया आयाम मिले।

- इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लोक-सभा में माननीय सांसदों के पोर्टल का उपयोग किया जा रहा है। प्रश्नकाल के साथ-साथ अन्य मुद्दों पर नोटिस भेजने के लिए और सरकार के उत्तर उपलब्ध कराने के लिए भी इस सुविधा का पहले से ही उपयोग किया जा रहा है।

- अब वर्तमान परिस्थितियों में लोकसभा के आगामी सत्र के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियां की जा रही हैं। सभी माननीय सदस्यों के स्वास्थ्य की जांच एवं सैनिटाइजेशन की व्यवस्था और सोशल डिस्टेंसिंग के नियमों के पालन पर भी जोर दिया जा रहा है।

  - मुझे पूरा विश्वास है कि राज्यों के विधान मंडल भी अपने विधायी कर्तव्यों के पालन में ऐसे तमाम नवाचारों पर बल देंगे।

  - साथियों, 21 अप्रैल की हमारी पिछली वर्चुअल बैठक के बाद लोकसभा में कंट्रोल रूम स्थापित हुआ था और उसके साथ विधान मंडलों में भी कंट्रोल रूम ग्रिड स्थापित किए गए थे, इस कदम से सांसदों और विधायकों को महामारी के दौरान भी जनता से सतत् संपर्क बनाए रखने में बड़ी सहायता मिली।

  - आज कई जनप्रतिनिधि हैं जो जनसंपर्क और जन सेवा के लिए आईटी का सदुपयोग कर अच्छा काम कर रहे हैं। उनकी बेस्ट प्रैक्टिसेज से हम सब प्रेरणा और सीख लेकर अपने-अपने क्षेत्रों में जन सेवा और विकास कार्यों का निर्बाध निष्पादन करें, ताकि लोक और तंत्र के बीच की दूरी को पाटा जा सके।

- इसी प्रकार, मैं चाहता हूं कि राज्यों की विधानसभाओं द्वारा भी डिजिटल माध्यमों का अधिक से अधिक उपयोग किया जाए। विधायी संस्थाओं द्वारा प्रजातंत्र के लिए और लोक कल्याण के लिए जो कार्य किए जा रहे हैं, वे अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचने चाहिए। आधुनिक समय में डिजिटल माध्यम के उपयोग से हम इस कार्य को और प्रभावी तरीके से पूरा कर सकते हैं।

  - जनप्रतिनिधियों द्वारा उनके कार्यों के प्रभावी निष्पादन में उनके निजी सहायकों की प्रधान भूमिका है। इसलिए डिजिटल माध्यम के उपयोग में उनकी कुशलता अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए उनके नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था सभी विधायी संस्थाओं द्वारा की जानी चाहिए।

- जन प्रतिनिधि के प्रतिष्ठा व सम्मान को बनाये रखने और उन्हें अपने कार्य में सुविधा देने के उद्देश्य से उनके प्रोटोकॉल दिशानिर्देशों का नियमित प्रचार-प्रसार और प्रवर्तन की आवश्यकता है। विधान सभाओं द्वारा इस सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश सम्बद्ध अधिकारियों को जारी किये जाने चाहिए।

- आज विधायी संस्थाओं में कार्यवाही के दौरान व्यवधान उत्पन्न करने की प्रवृत्ति बढ़ गयी है। इससे सदन का बहुमूल्य समय नष्ट हो जाता है। लोकसभा में इस समस्या के निदान के लिए कई कदम उठाये गए हैं। सदन में प्रत्येक सदस्य को अपनी बात कहने का अधिकार है, लेकिन इसमें निर्धारित नियमों और परम्पराओं का अनुपालन भी उतना ही आवश्यक है।

- इस संदर्भ में सदस्यों की ओर से अनुशासित और मर्यादित व्यवहार वांछित है। पीठासीन अधिकारियों से भी मेरा अनुरोध है कि वे सदस्यों को उनकी बात नियमानुसार रखने का पूरा-पूरा अवसर दें। कई बार पीठासीन अधिकारियों को सदन चलाने के लिए कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं, परन्तु इसे अंतिम उपाय के रूप में ही उपयोग करना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नियमों का प्रवर्तन करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो उनमे संशोधन भी करने चाहिए।

- अपने वक्तव्य के समापन से पूर्व मैं सभी कोरोना वारियर्स एवं फ्रन्टलाइन वर्कर्स को नमन करता हूँ और पूरे राष्ट्र की तरफ से उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं उन सभी चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और उद्यमियों का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस आपातकाल में समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी जान को जोखिम में डाल कर भी समाज की सेवा की है और लोक कल्याण के लिए समर्पण दिखाया है।

- उनके अनवरत प्रयासों का ही प्रतिफल है कि इतनी विषम परिस्थिति में भी हमने मात्र अपनी आवश्यकताएं ही पूरी नहीं की हैं बल्कि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अपनी सनातन परम्परा का पालन करते हुए अन्य 150 देशों को भी औषधि एवं उपकरण उपलब्ध कराए हैं।

- साथियों, यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। इस महामारी की विभीषिका से उबरने में अभी समय लगेगा। इसमें सरकार के साथ-साथ विधायी संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

- मुझे आशा ही नहीं, पूरा विश्वास है कि आज की चर्चा से दूरगामी एवं फलदायी परिणाम निकलेंगे और जन सेवा और राष्ट्र निर्माण के मार्ग को प्रशस्त करेंगे। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप सबके लिए आज का सम्मेलन उपयोगी होगा और यहां पर होने वाले विचार-विमर्श के माध्यम से समसामयिक मुद्दों पर एक सार्थक दिशा निर्धारित होगी।

- मेरा यह भी विश्वास है कि विधायी संस्थाएं एकजुट होकर प्रजातंत्र, समाज और राष्ट्र की समृद्धि और कल्याण के लिए कार्य करेंगे। मैं आप सबको अपनी ओर से शुभकामनायें देता हूँ।

- धन्यवाद। जय हिन्द|